किसान भी नहीं चाहता अपना बेटा हो किसान-विजय जावंधिया

हिंदी विवि में 'गाँव और शहर के बीच अंतर' पर चर्चा का आयोजन

वर्धा दि. 14 मार्च 2011: आज के गांव शहरीकरण की चपेट में आ गये है। इस परिदृश्य में खूद किसान भी नहीं चाहता कि अपना बेटा किसान हो और वह खेती बाडी के काम करें। वैश्विकरण ने आज जो मध्यम वर्ग तैयार किया है इसका ही यह परिणाम है। उक्त मंतव्य किसान नेता विजय जावंधिया ने महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के विचार मंच द्वारा गोरख पांडे छात्रावास में 'गाँव और शहर के बीच अंतर' विषय पर आयोजित चर्चा में रखे।

चर्चा की शुरूआत करते हुए उन्होंने कहा कि आज देश में कितने प्रतिशत किसान सिर्फ कृषि पर आश्रित रहकर अपने बच्चों को पढ़ाते है। आज के भारत का ग्रामीण परिवेश पूरी तरह से शहरीकरण के चपेट में आता जा रहा है। गाँव के लोग शहरों की तरफ आकर्षित होते जा रहे है। किसी समय भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था, और उस समय सोने की चिड़िया की अवधारना पूरी तरह से कृषि पर आधारित थी। भारत एक कृषि प्रधान देश हैं लेकिन आज कृषि के अहम क्षेत्र के साथ सौतेला ब्यवहार किया जा रहा है। शहरों की रौनक आज गाँव के वजह से ही बनी है लेकिन सरकार गाँव के तरफ अपना ध्यान केन्द्रित करना ही नहीं चाहती है। वैश्वीकरण ने आज जो मध्यम वर्ग तैयार किया है; जिससे आज बड़े से बड़ा किसान भी अपने बेटे को कृषि पर आधारित नहीं होने देना चाहता है।

वर्तमान समय के किसान आंदोलनों का जिक्र करते हुए उन्होंने खेद जताया कि आज तमाम किसान आन्दोलन स्थिर पड़े है और किसान आन्दोलन एक तरह से आरक्षण के आन्दोलन में तब्दील होते जा रहे है। एक तरफ छठें वेतन आयोग से सरकारी कर्मचारियों के वेतन में अपार वृद्धि हुई है तो दूसरी तरफ मजदूर वर्ग वही का वही पड़ा है। विदेशों में मजदूर सिर्फ एक घंटा काम करके अपना दैनिक जीवन यापन कर सकता है परंतु भारत के मजदूर दिनभर जी तोड़ मेहनत कर भी दो वक्त की रोटी चैन से नहीं खा सकते हैं। सरकार को इन समस्याओं के बारे में गहराई से सोचना होगा वरना आने वाला समय और भी भयानक होगा। कार्यक्रम का संचालन असिस्टेंट प्रोफेसर शरद जायसवाल ने तथा धन्यवाद ज्ञापन फिल्म एवं नाट्य अध्ययन विभाग के छात्र रोहित कुमार ने किया। इस चर्चा में गोरख पाण्डेय छात्रावास के छात्रों ने भागीदारी की।

बी. एस. मिरगे, जनसंपर्क अधिकारी

डॉ. राजेश उमाले के गजल गायन से यादगार बनी सांस्कृतिक संध्या

हिंदी विवि में गोरख पाण्डेय छात्रावास के उदघाटन का शानदान समारोह

वर्धा, 14 मार्च, 2011; महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के गोरख पाण्डेय छात्रावास के उदघाटन अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक संध्या कार्यक्रम यादगार बन गई। अमरावती के गजल गायक डॉ राजेश उमाले ने दिल को छूने वाली गजल प्रस्तुत कर उपस्थितों को खूब रिझाया, उनके गीत के बोल में जहां एक ओर प्रेम की अभिव्यक्ति थी वहीं दूसरी ओर शोषण अन्याय के प्रति आवाजें भी। जानेवाले, ओ...जानेवाले, तुमको देखा तो ये ख्याल आया..., प्यार का पहला खत लिखने में वक्त तो लगता है, नए परिदों को उड़ने में वक्त तो लगता है...जैसे गजल से श्रोता काफी प्रसन्नचित्त दिखे, कई तो अपने को थिरकने से रोक नहीं पाए। परदेश में है हम देश में निकला होगा चांद...नज्म पेश करते वक्त सभी खुले आकाश की ओर चांद निहारने लगे। गजलकार डॉ.राजेश उमाले के साथ गिटार पर डॉ.संदीप कपूर ने, तबले पर डॉ.देवेन्द्र यादव ने, ऑरगन पर बंटी ने संगत की। जहां अनंत नांदूरकर ने गजल समारोह का संचालन शायराना अंदाज में किया तो वहीं प्रशांत कोल्हे ने साउंड इंजीनियर के रूप में अपना सहयोग दिया। गौरतलब है कि कवि गोरख पाण्डेय के नाम पर बने 76 कमरों के छात्रावास का उदघाटन वरिष्ठ साहित्यकार मैनेजर पाण्डेय के हाथों किया गया। उदघाटन समारोह में कुलपति विभूति नारायण राय, जेएनयू के प्रो.तुलसीराम, प्रतिकुलपति प्रो.ए.अरविंदाक्षन, कार्यपरिषद सदस्य डॉ.तंकमणि अम्मा, कुलसचिव डॉ.के.जी.खामरे मंचस्थ थे। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के राईटर इन रेजीडेन्स कवि आलोक धन्वा, विशेष कर्तव्याधिकारी नरेन्द्र सिंह, प्रो.अनिल के.राय अंकित, प्रो.संतोष भदौरिया, डॉ. कृपाशंकर चौबे, डॉ.राम प्रकाश यादव सहित बड़ी संख्या में अध्यापक, कर्मी, शोधार्थी व विद्यार्थी उपस्थित थे।

फोटो कैप्शन-सांस्कृतिक संध्या के दौरान गजल प्रस्तुत करते हुए डॉ.राजेश उमाले व अन्य कलाकार।

फोटो कैप्शन-सांस्कृतिक संध्या के दौरान उपस्थित श्रोतागण।

(अमित कुमार विश्वास)

गोरख पाण्डेय थे श्रमशील जनता की बेचैनी के कवि- प्रो.मैनेजर पाण्डेय
हिंदी वि.वि. में गोरख पाण्डेय छात्रावास का हुआ उदघाटन

वर्धा, 14 मार्च, 2011; महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के गोरख पाण्डेय छात्रावास के उदघाटन अवसर पर आयोजित समारोह में वरिष्ठ साहित्यकार प्रो.मैनेजर पाण्डेय ने कहा कि गोरख पाण्डेय श्रमशील जनता की बैचेनी के कवि थे। वे बनारस से लेकर जेएनयू के छात्रावास में रहे, उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा होगा कि किसी विश्वविद्यालय में उनके नाम पर छात्रावास होगा, लेकिन कुलपति विभूति नारायण राय ने इस असंभव को संभव कर दिया इसलिए विभूति जी बधाई के पात्र हैं। गोरख पाण्डेय ने उन मजदूरों पर लिखा जो छात्रावास से लेकर पांच सितारा होटल का निर्माण करते हैं। जब आलीशान ईमारत बनकर तैयार हो जाती है तो मजदूरों को खदेड़ दिया जाता है, हम उन मजदूरों को भी बधाई देते हैं जिन्होंने इस छात्रावास को बनाया है। समारोह की अध्यक्षता कुलपति व वरिष्ठ कथाकार विभूति नारायण राय ने की। इस अवसर पर दलित चिंतक प्रो.तुलसीराम, विश्वविद्यालय के कार्यपरिषद की सदस्य तंकमणि अम्मा, प्रतिकुलपति प्रो.ए.अरविंदाक्षन, कुलसचिव डॉ.के.जी.खामरे, छात्रावास अधीक्षक डॉ.रामप्रकाश यादव मंचस्थ थे।

इस अवसर पर प्रो. तुलसीराम ने गोरख पाण्डेय के साथ बिताए अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि सोवियत यूनियन टूटने के बाद समाजवाद की विचारधारा पूरे विश्व में हावी हो रही थी, हमलोग उस विचारधारा से प्रभावित हुए। गोरख पाण्डेय ने समाज में परिवर्तनकारी कविताएं लिखी। उनकी कविताएं सामाजिक समस्याओं के निदान की कविताएं थी। वे इतने संवेदनशील थे कि उन्होंने सामाजिक समस्याओं से तंग आकर 45 वर्ष की अवस्था में 29 जनवरी 1989 को आत्महत्या कर ली।

अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति विभूति नारायण राय ने गोरख की स्मृति को नमन करते हुए कहा कि उनके नाम पर बने छात्रावास में बौद्धिक व लोकतांत्रिक माहौल बना रहे। उन्होंने आशा जतायी कि यहां के अंत:वासी ज्ञान व बौद्धिकता से देश व समाज को नई राह दिखा सकेंगे। स्वागत वक्तव्य में प्रतिकुलपति प्रो.ए.अरविंदाक्षन ने कहा कि गोरख पाण्डेय हिंदी के क्रांतिकारी कवि थे, वे कविता और जीवन दोनों में संघर्षशील थे। युवा शक्ति को उर्जावान बनाने वाले गोरख पाण्डेय के नाम पर इस छात्रावास का नामकरण हुआ है आशा है कि यहां के विद्यार्थी अपनी उर्जा से समाज में सकारात्मक कार्य करते रहेंगे। कुलपति राय के मार्गदर्शन में छात्रावास बहुत जल्द तैयार होन पर प्रसन्नता जताते हुए उन्होंने विशेष कर्तव्याधिकारी सहित कई लोगों को बधाई दी। जनसंपर्क अधिकारी बीएस मिरगे व छात्रावास के अधीक्षक व अनुवाद एवं निवर्चन विद्यापीठ के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. रामप्रकाश यादव ने मंच का संचालन किया। कुलसचिव डॉ.के.जी.खामरे ने आभार मानते हुए विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी। शुरूआत में प्रो.मैनेजर पाण्डेय के हाथों छात्रावास का उदघाटन किया गया। तदुपरांत छात्रावास परिसर में लगे गोरख पाण्डेय की मूर्ति पर अतिथियों व विश्वविद्यालय परिवार ने पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। समारोह के क्रम में छात्रावास में बने वाचनालय कक्ष, कम्प्यूटर लैब व व्यायामशाला का भी उदघाटन किया गया। इस दौरान प्रो. पाण्डेय द्वारा छात्रावास परिसर में वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शैक्षणिक, गैर-शैक्षणिक कर्मी, शोधार्थी व विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

फोटो कैप्शन- गोरख पाण्डेय छात्रावास का उदघाटन करते हुए प्रो.मैनेजर पाण्डेय, साथ में कुलपति विभूति नारायण राय, प्रतिकुलपति प्रो.ए.अरविंदाक्षन, कुलसचिव डॉ.के.जी.खामरे, प्रो. तुलसीराम, डॉ.तंकमणि अम्मा व अन्य महानुभाव।